

राज्यपाल की अध्यक्षता में स्वर्णप्राशन के औषधीय
महत्व पर आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक चिकित्सकों की
संगोष्ठी सम्पन्न

चिकित्सकों की चर्चाएं आई ओपनर हैं

उत्तर प्रदेश का औषधीय ज्ञान बहुमूल्य है, औषधि
निर्माण के लिए देश का नेतृत्व करें

शोध कार्यों के लिए विषय सूची बनाएं और
विश्वविद्यालयों को जोड़ें

—राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल

स्वर्णप्राशन आयुर्वेद की प्रभावी औषधि है, लेकिन
औषधि का मानक और मात्रा निर्धारण जरूरी है

—डॉ० सोनिया नित्यानंद, कुलपति के.जी.एम.यू.

स्वर्णप्राशन इन्फेक्शन से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है

—डॉ० गौरव पाण्डे, एस.जी.पी.जी.आई.

लखनऊ : 21 मई, 2024

प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में आज यहाँ राजभवन में आयुर्वेदिक औषधि स्वर्णप्राशन के औषधीय महत्व पर एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सकों की संयुक्त संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस अवसर पर राज्यपाल जी ने संगोष्ठी में हुई चर्चाओं को 'आई ओपनर' कहा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश का औषधीय ज्ञान बहुमूल्य है। आयुर्वेदिक औषधियों के स्टैण्डर्ड निर्माण में उत्तर प्रदेश के नेतृत्व के लिए आगे आए।

राज्यपाल जी ने संगोष्ठी में आयुर्वेद और एलोपैथिक चिकित्सकों द्वारा दिए गए प्रस्तुतिकरण में स्वर्णप्राशन औषधि के प्रयोग और प्रभाव पर हुई केस स्टडीज को देखते हुए कहा कि इसमें प्रभावी कार्य हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री जी भी आयुर्वेदिक औषधियों और इसके परम्परागत ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते हैं। इस दिशा में प्रदेश में कार्य को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दवा निर्माण के लिए विश्वविद्यालयों में शोध किए जाएं। अलग-अलग शोध कार्यों की सूची बनाएं और उनसे विश्वविद्यालयों को जोड़ा जाए। कोई एक विश्वविद्यालय या विभाग ये कार्य नहीं कर सकता। इसमें चिकित्सा के सभी विभाग और विश्वविद्यालय जोड़े जाएं। कार्य और शोध विषयों की रूपरेखा बनाकर शीघ्र कार्य प्रारम्भ किए जाएं।

संगोष्ठी में राज्यपाल जी के समक्ष आज राजभवन में आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ० अभय नारायण तिवारी ने आयुर्वेदिक औषधि 'स्वर्णप्राशन' के स्वास्थ्यवर्द्धक प्रभावों, भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के बहुमूल्य स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान को लेकर प्रस्तुति दी तथा इसके अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक प्रचार-प्रसार और सम्वर्द्धन किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रस्तुतिकरण का अवलोकन करते हुए डॉ० सोनिया नित्यानंद कुलपति के.जी. एम.यू. ने कहा कि 'स्वर्णप्राशन' निश्चित रूप से आयुर्वेद की एक प्रभावी औषधि है, लेकिन इसके सर्वमान्य उपयोग से पूर्व मानक और मात्रा का निर्धारण तथा इसके दुष्प्रभावों को जानना भी जरूरी है। उन्होंने इस पर पर्याप्त शोध और दवा के अंतर्राष्ट्रीय निर्धारण के नियमों पर चर्चा की।

संगोष्ठी में डॉ० विकास अग्रवाल प्रो० क्लीनिकल इम्यूनोलॉजी विभाग, एस. जी.पी.जी.आई. ने 'स्वर्णप्राशन' से कुपोषित बच्चों के रक्त में किए गए शोध के सकारात्मक प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इससे बच्चों के रक्त में बीमारी से लड़ने वाले प्रोटीन की मात्रा कई गुना बढ़ जाती है। डॉ. गौरव पाण्डेय एस.जी.पी.जी.आई. ने बताया कि गोल्ड थेरेपी हेपेटिक पार्किन्सन में बेहद लाभदायक

पाई गई है। उन्होंने 11 मरीजों पर किए गए अध्ययन साझा किए और बताया कि लिवर सिरोसिस में इन्फेक्शन से क्षमता बढ़ी है।

संगोष्ठी में प्रो० एम.एल.बी. भट्ट, कुलपति एच.एन. बी. मेडिकल विश्वविद्यालय देहरादून, डॉ० संजीव मिश्रा कुलपति अटल बिहारी बाजपेई, डॉ० सी.एम. सिंह निदेशक आर.एम.एल., प्रो० शालीन कुमार एस.जी.पी.जी.आई., डॉ० पी.सी. सक्सेना निदेशक आयुर्वेद सेवाएं उ०प्र० ने भी विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा तथा प्रमुख सचिव स्वास्थ्य आयुष श्रीमती लीना जौहरी ने दवा नियंत्रण तथा दवाओं पर आगामी शोध, फण्ड व्यवस्था आदि पर जानकारी दी।

संगोष्ठी में अपर मुख्य सचिव, श्री राज्यपाल, डॉ सुधीर महादेव बोबडे, विशेष कार्याधिकारी शिक्षा डॉ० पंकज एल. जानी तथा अन्य अधिकारी गण उपस्थित रहे।

डा० सीमा गुप्ता,
सहायक निदेशक सूचना, राजभवन
सम्पर्क सूत्र- 8318116361

